ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 50-51
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

# जीवन का मूलभूत आधार शिक्षा एवं संस्कार

प्रियंका राय
शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग

Received-03.10.2023, Revised-10.10.2023, Accepted-15.10.2023 E-mail: pankajkumarrai1977@gmail.com

***सारांश:*** ***मानव और पशु का जन्म अनादिकाल से हो रहा है, परन्तु ये पंच इन्द्रीय जीव होने के पश्चात भी चिंतन क्षमता के कारण अलग–अलग है। मानव जीवन एक अनमोल धरोहर है जो हमें प्रकृति अथवा ईश्वर के द्वारा विरासत में मिलता है। इस धरोहर की संवृद्धि शिक्षा एवं संस्कार से होती है। शिक्षा एवं संस्कार के बिना ब्रह्माण्ड की सभी सम्पदा व्यर्थ है। शिक्षा एवं संस्कार एक दूसरे से जुड़े है। शिक्षा मनुष्य के जीवन का एक अनमोल उपहार अथवा तोहफा है, जो व्यक्ति के जीवन में अमूलचूल परिवर्तन लाकर जीवन को खुशहाल, संवृद्धि एवं सफल बनाता है। इसी प्रकार संस्कार भी मानव जीवन का मौलिक आधार है। इसके माध्यम से मानव अपने जीवन को और आसान एवं सफल बना लेता है। मानव का व्यक्तित्व संस्कार के द्वारा ही निखारा जा सकता है। जीवन की प्रथम गुरु (माँ) से लेकर समस्त गुरु शिक्षा तो देते हैं, परन्तु संस्कार भी साथ–साथ देते हैं, क्योंकि बिना संस्कार के शिक्षा अधूरी है, अर्थात शिक्षा एवं संस्कार एक सिक्के के दो पहलू है।***

***कुंजीभूत शब्द– अनादिकाल, चिंतन, क्षमता, मानव जीवन, अनमोल धरोहर, विरासत, शिक्षा, संस्कार, सम्पदा, पहलू, सदाचार।***

वर्तमान युग में हम बिना शिक्षा के सफल जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि, ''सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है यानि के सारांश रूप में यह कह सकते हैं कि शिक्षा का अर्थ सर्वांगीण विकास है।'' अर्थात शिक्षा मानव के जीवन का आभूषण है। शिक्षा के ही माध्यम से समाज रुपी जीवन के सपनों को साकार कर सकते हैं। शिक्षा का अभिप्राय है ज्ञान, सदाचार, उचित आचरण, शिष्टाचार एवं तकनीकि शिक्षा। जिससे मानव, जीवन के परिपूर्ण दक्षता को प्राप्त करे। पारसन्स के अनुसार, ''आधुनिक समाजों में शिक्षा अर्जन का मूल्य और अवसरों की समानता या सार्वभौमिक मूल्यों को स्थापित करती है।'' इसी तरह पियरे बोर्दियो ने शिक्षा को 'सांस्कृतिक पूंजी' और शिक्षा को 'सांस्कृतिक पुर्नउत्पादन' की संज्ञा देते है। प्रत्येक नागरिक को शिक्षण को ग्रहण करने का पूरा अधिकार है। 2009 से ही भारत में भी निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिनियम के तहत शिक्षा प्रदान की जा रही है। बचपन से ही बच्चों को अच्छी शिक्षा एवं संस्कार यदि दिलवाया जाय तो सारी समस्या का निदान आसान हो जायेगा। यदि मानव को यह ज्ञात हो जाय कि सही क्या है और गलत क्या है तो मानव स्वयं सर्वोपरि हो जायेगा। मनुस्मृति में कहा गया है कि 'संस्कार व्यक्ति की अशुद्धियों का नाश कर उसके शरीर को पवित्र बनाता है।'' अर्थात संस्कार एवं शिक्षा से युक्त व्यक्ति सुसंस्कृतिनिष्ठ एवं चरित्रवान हो जाता है। जो देश निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने लगता है। बिना संस्कार एवं शिक्षा के मानव पशु के समान होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा एवं संस्कारों का समावेश अच्छे ढंग से करना चाहिए। यह अमूल्य धरोहर हम अपने माता–पिता एवं गुरू से सीखते हैं। अतः इनका सम्मान आजीवन करना चाहिए। क्योंकि मानव की प्रथम पाठशाला घर एवं प्रथम गुरू माता–पिता ही होते हैं। उसके बाद क्रमानुसार विद्यालय एवं महाविद्यालय आते है। मानव को स्वयं शिक्षित होकर अपने आगे आने वाली पीढ़ी को भी शिक्षित एवं संस्कार युक्त बनाये। यह हमारी जिम्मेदारी है, नही तो आने वाली पीढ़िया खराब हो जायेगी। जिस प्रकार जीवन में शिक्षा एवं संस्कार की भी आवश्यकता है।

शिक्षा और संस्कार जिस व्यक्ति में है। वही आज के युग में महान एवं सर्वोपरि है। इसलिए समाज के सम्मानित व्यक्तित्व की पदवी हासिल करना है, तो अपने बच्चों को शिक्षित बनाना है। जिससे देश के निर्माण में अहम भूमिका निभाने के योग्य बन सके तथा गर्व से कह सके कि हम भारतीय है। शिक्षा एवं संस्कार एक दूसरे के पूरक है, क्योंकि बहुत ही शिक्षित व्यक्ति हो, परन्तु उसके अंदर संस्कार का अभाव हो तो सब व्यर्थ ही समझा जायेगा। बिना दोनों के हमारी समाज में पहचान नहीं बन सकती।

शिक्षा संस्कार की जननी है। शिक्षा एवं संस्कार दोनों मानव के लिए अति आवश्यक हैं यदि संस्कार मानव एवं मानवता के लिए जरूरी है तो शिक्षा मानव जीवन को ज्ञानी, शिक्षित और हर दौर में आगे बढ़ाता है, जो देश की तरक्की में सहायक होते हैं, जैसे जल का जीवन में महत्व है वैसे ही जीवन में संस्कार का महत्व है। बच्चों की परवरिश में शिक्षा और संस्कार दोनों की बहुत आवश्यकता है क्योंकि बिना शिक्षा के उन्हें किसी भी चीज की जानकारी नहीं होती और बिना संस्कार के वो किसी भी मनुष्य का सम्मान करना भूल जाते है। शिक्षा से मानव को प्रत्येक क्षेत्र का ज्ञान हो जाता है। उसके पास सभ्यता आ जाती है और संस्कार से वह समाज में जीवन जीने की कला सीख जाता है। इसलिए मानव के लिए शिक्षा एवं संस्कार दोनों आवश्यक है, क्योंकि तभी वह अच्छा नागरिक एवं अच्छा इंसान बन सकता है।

बच्चे का मन एक कोरे कागज के समान है, जिसको हम जिस आकार में ढालेंगे उसी अनुरूप वह हो जाता है। हर छोटे बच्चें की जिन्दगी में शुरूआत से ही शिक्षा और संस्कार को देना हर माता–पिता का कर्तव्य होता है। सभी बच्चें को घर पर ही सबसे पहला संस्कार दिया जाता है, जो उसके चरित्र का निर्माण और अच्छा इंसान बनाता है, जो उसे उज्ज्वल भविष्य और समाज में सिर उठाकर जीना और साथ ही साथ सम्मान भी दिलाती है। बच्चों में शिक्षा और संस्कार दोनों चीजों का होना आवश्यक है। जहाँ शिक्षा उनको अध्यापक देते हैं लेकिन संस्कार केवल परिवरिश से ही आते है। इसलिए जरूरी है कि माता–पिता अपने बच्चों को संस्कारी बनाये।

संस्कार किताबों में नहीं मिलता बल्कि व्यावहारिक समाज में मिलता है। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार, ''शिक्षा व्यक्ति में अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।''

**अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

अरस्तू के अनुसार, "शिक्षा मनुष्य की शक्तियों का विकास करती है, विशेष रूप से मानसिक शक्तियों का विकास करती है, तॉकि वह परम सत्य शिव एवं सुन्दर का चिंतन करने योग्य बन सके।

संस्कार ही इस दुनिया को खूबसूरत बनाता है। किसी भी बच्चें को संस्कार सिखाने में माँ से ज्यादा क्षमतावाद कोई और नहीं होता है। संस्कार भी पानी, दूध, हवा आदि की तरह है, जो पुरानी होने के बाद भी अपनी महत्ता नहीं खोती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा और संस्कार हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण है। हम जीवन में शिक्षा और संस्कार उपकरण का प्रयोग करके कुछ भी अच्छा हासिल या प्राप्त कर सकते है। जैसे अंधेरे का अनुभव करने पर प्रकाश का महत्व बढ़ जाता है, तो उसी प्रकार शिक्षा और संस्कार के अभाव में ही इसे और अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

शिक्षा और संस्कार के बिना हमारा जीवन निरर्थक है। इन दोनों के बिना सब बेकार है। शिक्षा और संस्कार दोनों जीवन का एक अच्छी दिशा दिखलाती है। ये दोनों जीवन के मूलभाग है। शिक्षा और संस्कार के माध्यम से व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास होता है।

व्यक्ति में सम्पूर्ण विकास के लिए केवल शिक्षा का नहीं, उससे भी कहीं ज्यादा संस्कारों की जरूरत है। शिक्षा और संस्कार के बिना हम अधूरे है। इन दोनों से हमारे ज्ञान कुशलता, व्यक्तित्व के विकास में और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

शिक्षा और संस्कार हमारे जीवन की सफलता की कुंजी और बेहतर जीने का तरीका हो सकता है। शिक्षा और संस्कार आत्मविश्वास और ऊँची उड़ान भरने और सपनों में जान डालने जैसे है। शिक्षा और संस्कार व्यक्ति के जीवन स्तर को उच्च करता है। अगर व्यक्ति के अंदर शिक्षाा और संस्कार है, तो वो उन्नति करेंगे और अगर लोग बढ़ेगें तो देश भी उन्नति की दिशा को बढ़ेगा। शिक्षा और संस्कार से युक्त व्यक्ति जिन्दगी में अच्छे मुकाम पाने में सहायता करता है। एक आदर्श सभ्य, सजग समाज से युक्त हो, शिक्षा और संस्कार से ही मनुष्य मान–प्रतिष्ठा, आर्थिक उन्नति और जीवन के हर लक्ष्य को प्रदान करता है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाजन, वी0डी0 : प्राचीन भारत का इतिहास, एल0चन्द एण्ड कं0प्रा0लि0, प्रथम संस्करण, 1962.
2. वैदिक संस्कृतिः गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, लोक भारती प्रकाशन।
3. त्रिपाठी, किरन : वैदिक साहित्य का इतिहास।
4. दिनकर, रामधारी सिंह : संस्कृति के चार अध्याय।
5. शुक्ल, सच्चिदानंद : हिन्दू धर्म के सोलह संस्कार।

*****